# डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म, 1 और 2 सैमुअल, सत्र 6, 1 सैमुअल 8

© 2024 रॉबर्ट चिशोल्म और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म 1 और 2 सैमुअल पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 6, 1 शमूएल 8 है, इज़राइल एक राजा की मांग करता है।

अपने अगले पाठ में, हम 1 शमूएल अध्याय आठ को देखेंगे, जिसका शीर्षक मैंने इसराइल एक राजा की मांग करता है रखा है।

जो विषय हम यहां देखते हैं वह यह है कि प्रभु अपने लोगों को उनके अधिकार को अस्वीकार करने की अनुमति दे सकते हैं क्योंकि इस अध्याय में इज़राइल अनिवार्य रूप से यही करने जा रहा है, यह दुखद है। और प्रभु, जो अपने लोगों के साथ लेन-देन के रिश्ते में है, वह स्वतंत्रता देता है और वह उन्हें अपने अधिकार को अस्वीकार करने की अनुमति देगा। लेकिन साथ ही, वह उन्हें उनके निर्णय के नकारात्मक परिणामों और इस विशेष मामले में उनके विद्रोह के बारे में चेतावनी देता है।

तो, हम 1 शमूएल 8 में जा रहे हैं। 1 शमूएल 7, आपको याद होगा, एक उच्च बिंदु है जब इज़राइल पश्चाताप करता है और प्रभु के पास वापस आता है और एक महान जीत का अनुभव करता है। लेकिन यहां हम अध्याय आठ में हैं और वे इतने अच्छे नहीं दिखेंगे।

वैसे, यह एक पैटर्न है जिसे हम पूरे पुराने नियम में देखते हैं। मैंने एक गर्मियों में चर्च में अपनी वयस्क कक्षा में इनफ़ैमस लेटडाउन्स इन द ओल्ड टेस्टामेंट नामक एक श्रृंखला भी बनाई थी। और वहाँ एक पैटर्न है.

ठीक उसके बाद जब वे सूखी भूमि पर लाल सागर को पार करते हैं और प्रभु उन्हें मिस्रियों पर एक बड़ी जीत दिलाते हैं, ठीक उसके बाद, वे शिकायत कर रहे हैं और कराह रहे हैं और विलाप कर रहे हैं। डेविड, जैसा कि हम शमूएल की किताबों में देखेंगे, गोलियथ पर उसकी महान विजय के बाद, बहुत समय नहीं बीता जब वह बहुत डर के मारे शाऊल के पास से भाग रहा था और नोवे में पुजारी के पास आया और कहा, क्या तुम्हारे पास तलवार है ? और मुझे जो एकमात्र मिला वह वही है जो तुमने गोलियथ से लिया था। वह कहता है, ओह, ऐसा कुछ नहीं है।

उस समय, वह एक मानवीय हथियार पर भरोसा कर रहा था और विडंबना यह है कि इसका इस्तेमाल उसके सबसे बड़े दुश्मन ने किया था जिसे उसने हराया था। इसलिए, यह पैटर्न पूरे पुराने नियम में चलता है और हम इसे यहां देखते हैं, कि लोगों को कभी-कभी प्रभु के प्रति अपनी प्रतिबद्धता बनाए रखने में कठिनाई होती है। तो, 1 शमूएल अध्याय 8, और हम सबसे पहले शमूएल के पुत्रों के बारे में पढ़ने जा रहे हैं।

उनका उल्लेख पहले नहीं किया गया था, लेकिन जाहिर तौर पर, उन्होंने अपने नक्शेकदम पर चलने के लिए अपने बेटों को न्यायाधीश नियुक्त किया था। और इसलिए, हम 1 शमूएल 8, 1 में

पढ़ते हैं, जब शमूएल बूढ़ा हो गया, तो उसने अपने पुत्रों को इस्राएल के लिए न्यायाधीश नियुक्त किया। उनके पहले बेटे का नाम योएल था और उनके दूसरे बेटे का नाम हिब्रू में अबिय्याह या अवियाह था, और वे दक्षिण में बेर्शेबा में सेवा करते थे।

लेकिन दुर्भाग्य से उनके बेटे उनके रास्ते पर नहीं चले। यह दिलचस्प है क्योंकि एली के साथ यही समस्या थी, है ना? वे बेईमानी के लाभ के पीछे हट गए, उन्होंने रिश्वत ली और न्याय को बिगाड़ दिया। बेशक, पुराने नियम का कानून किसी भी सांस्कृतिक संदर्भ में गलत है।

वे अपने पिता से भिन्न थे। एली के मामले में याद रखें, प्रभु के दृष्टिकोण से, वह अपने बेटे के गलत कामों से लाभान्वित हो रहा था और वह उन्हें उस तरह से नहीं डांट रहा था जिस तरह से उसे देना चाहिए था। प्रभु की दृष्टि में शमूएल को उसके पुत्रों के साथ नहीं रखा गया है।

इसलिये इस्राएल के सब पुरनिये इकट्ठे होकर रामा में शमूएल के पास आये। याद रखें, रामा उनका गृहनगर है जिसका उल्लेख पिछले अध्याय में किया गया है। और उन्होंने उस से कहा, तू तो बूढ़ा है, और तेरे लड़के तेरे मार्ग पर नहीं चलते।

अब अन्य सभी राष्ट्रों की तरह हमारा नेतृत्व करने के लिए एक राजा नियुक्त करें। इसलिए, वे न्याय और इस मामले में अन्याय को लेकर चिंतित प्रतीत होते हैं। और वे कह रहे हैं, तुम्हारे बेटे तुम्हारे जैसे नहीं हैं।

हम नहीं चाहते कि जब तुम बूढ़े हो गए हो तब वे ही हमारा नेतृत्व करें। सैमुअल। हम एक राजा चाहते हैं और हम सभी देशों की तरह एक राजा चाहते हैं। तो सैमुअल कैसे प्रतिक्रिया देगा? प्रभु कैसे प्रतिक्रिया देंगे? दरअसल, व्यवस्थाविवरण 17 में, प्रभु ने एक ऐसे दिन की भविष्यवाणी की थी जब इस्राएल सभी राष्ट्रों की तरह एक राजा की माँग करेगा।

उस पर थोड़ा और विस्तार से। और जब उन्होंने कहा, हमारे लिये एक राजा बना, जो हमारी अगुवाई करे, तो शमूएल को यह अप्रसन्न हुआ। वह इस बात से खुश नहीं है.

इसलिए, उसने प्रभु से प्रार्थना की। और यहोवा ने उस से कहा, जो कुछ लोग तुझ से कहते हैं उसे सुन। उन्होंने तुम्हें नहीं, बल्कि मुझे अपने राजा के रूप में अस्वीकार किया है।

कुछ लोगों को लगता है कि जब वह कहता है, जो कुछ लोग आपसे कह रहे हैं उसे सुनो, तो इसका मतलब यह है कि उसका मतलब सभी शब्दों से है। शमूएल ने अभी कहा, हमें अगुवाई करने के लिये एक राजा दो। उन्होंने राष्ट्रों के बारे में कुछ नहीं कहा.

लेकिन मुझे नहीं लगता कि यहां ऐसा कुछ हो रहा है। मुझे लगता है कि यह एक मुहावरा है. सभी की बात सुनें और उन्हें वह दें जो वे चाहते हैं।

क्योंकि इसके बाद आने वाले कुछ अन्य अंशों में, जैसे अध्याय 12, पद 1 में, शमूएल कहता है, जो कुछ तू ने कहा है वह सब मैं ने सुना है, और मैं ने तुझे एक राजा दिया है। इसलिए, मुझे लगता है

कि सबकी बात सुनने का सीधा सा मतलब है कि वे जो चाहते हैं वही करें। उन्हें वह दें जो वे चाहते हैं, जो आश्चर्य की बात है।

यह प्रभु की ओर से एक आश्चर्यजनक प्रतिक्रिया है। उन्होंने तुम्हें नहीं, बल्कि मुझे राजा के रूप में अस्वीकार किया है। जैसा उन्होंने उस दिन से किया है , जब मैं उन्हें मिस्र से निकाल लाया, और आज के दिन तक, वे मुझे त्यागकर पराये देवताओं की उपासना करने लगे, वैसा ही वे तुम्हारे साथ भी कर रहे हैं।

अब उनकी सुनो, परन्तु उन्हें चेतावनी दो, और उन्हें बताओ कि जो राजा उन पर राज्य करेगा वह क्या करेगा। उन्हें वह राजा दे दो, परन्तु उन्हें चेतावनी दो कि वह कैसा होगा। श्लोक 8 में ध्यान दें, कि प्रभु यह कहते प्रतीत होते हैं कि वे तुम्हें अस्वीकार कर रहे हैं।

परन्तु श्लोक 7 में उन्होंने कहा, उन्होंने सचमुच मुझे अस्वीकार किया है, तुम्हें नहीं। यहाँ क्या चल रहा है? क्या यह विरोधाभास है? कभी-कभी हिब्रू बाइबिल में, वे एक्स का नहीं, बल्कि वाई का उपयोग करते हैं, जब उनका मतलब एक्स से अधिक वाई होता है, या एक्स का वाई नहीं, जब उनका मतलब एक्स से अधिक होता है। और मुझे लगता है कि यहां भी यही मामला है। प्रभु मूलतः कह रहे हैं, उन्होंने मुझे अस्वीकार किया, तुम्हें नहीं।

उसका वास्तव में मतलब यह है कि उन्होंने आपसे ज्यादा मुझे अस्वीकार कर दिया। और श्लोक 8 में, वह मानता है कि शमूएल को, उसके प्रतिनिधि के रूप में, अस्वीकार कर दिया गया है। लेकिन यह भगवान के प्रतिनिधि के रूप में है, देखिए।

तो, आख़िरकार, वे वास्तव में भगवान ही हैं जिन्हें वे अस्वीकार कर रहे हैं। और ऐसा प्रतीत होता है कि प्रभु उन्हें इसके लिये सौंपने को तैयार हैं। उन्हें वह दो जो वे चाहते हैं, सैमुअल।

वे जो कुछ कह रहे हैं उसे सुनें, उन्हें वह राजा दें जो वे चाहते हैं। लेकिन उन्हें सावधान करें. उन्हें चेतावनी दें कि क्या होने वाला है.

और इसलिए, शमूएल ने उन लोगों को प्रभु के सभी शब्द बताए जो उससे राजा के लिए पूछ रहे थे। उसने कहा, जो राजा तुम पर राज्य करेगा वह यही करेगा। और जैसे ही हम इसे पढ़ते हैं, देखते हैं कि टेक शब्द का प्रयोग कितनी बार किया जाता है।

अब मुझे लगता है कि यह हिब्रू की तुलना में अंग्रेजी अनुवाद में थोड़ा अधिक दिखाई देता है, लेकिन हिब्रू में कम से कम चार बार ऐसा होता है जहां टेक का उपयोग किया जाता है। और यह भी ध्यान दें कि आपका, सर्वनाम आपका कितनी बार उपयोग किया जाता है । वह तुम्हारा जो कुछ है उसे ले लेगा।

आप इसके मालिक हैं, लेकिन यह आपसे छीन लिया जाएगा। और इसलिए, राष्ट्रों के राजा इसी प्रकार कार्य करते हैं। वे एक सैन्य मशीन से परिपूर्ण, इन बड़ी शाही नौकरशाही का निर्माण करते हैं।

और इन सभी सैनिकों और जनरलों और इन सभी लोगों को खाना खिलाना होगा और उनकी देखभाल करनी होगी और उन्हें अच्छी तरह से रहना होगा। और इसलिए, वह इस बड़ी शाही नौकरशाही का निर्माण करने जा रहा है और इसे बढ़ावा देने के लिए, उसे आपके पैसे की आवश्यकता होगी और उसे आपके बच्चों की आवश्यकता होगी और उसे उन चीजों की आवश्यकता होगी जो आपकी हैं। तो, अंत में, आप इस राजा को श्राप देने जा रहे हैं जिसकी आपको आवश्यकता है।

तो यह यहाँ है. जो राजा तुम पर राज्य करेगा वह यही करेगा। और प्रभु उन्हें यहां चेतावनी दे रहे हैं, और यह दयालु है।

प्रभु उन्हें बता रहे हैं कि वे क्या कर रहे हैं। वह तेरे पुत्रों को लेकर अपने रथों और घोड़ों की सेवा कराएगा, और वे उसके रथोंके आगे आगे दौड़ेंगे। तो, उसके पास रथ और घोड़े होंगे।

और निस्संदेह, हम कानून से जानते हैं कि इज़राइल को ऐसा नहीं करना चाहिए। तो तुरंत, मैं सोच रहा हूं कि यह राजा कानून का पालन नहीं करेगा। वह वही करने जा रहा है जो इस संस्कृति में राजा आमतौर पर करते हैं।

उसके पास एक रथ बल होगा क्योंकि आपके पास एक होना चाहिए। यदि आप एक आधुनिक सेना बनाने जा रहे हैं, तो आपके पास कुछ रथ होने चाहिए। मिस्रियों के पास रथ थे, हित्तियों के पास रथ थे, और सीसरा के अधीन कनानियों के पास रथ थे।

मेरे पास कुछ रथ होने चाहिए। तो तुरंत, यह संकेत देता है कि यह राजा परमेश्वर के कानून के अनुरूप नहीं है। और वह तुम्हारे पुत्रों को अपनी सेवा में ले जाएगा।

कुछ को वह हजारों का सेनापति और पचासों का सेनापति नियुक्त करेगा और कुछ को अपनी जमीन जोतने और अपनी फसल काटने के लिए नियुक्त करेगा और कुछ को युद्ध के हथियार और अपने रथों के लिए उपकरण बनाने के लिए नियुक्त करेगा। वह तेरी पुत्रियों को सुगन्धद्रव्य, रसोइया, और बेकरी बनाने के लिये ले जाएगा। तो, उसके पास ये सभी क्षेत्र होंगे।

उसे उन पर काम करने और फसल लाने के लिए लोगों की आवश्यकता होगी। और फिर उसे बहुत सारे लोगों को खाना खिलाना होगा। तो, मुझे लगता है, उसे शाही दरबार में महिलाओं के लिए इत्र बनाने के लिए रसोइयों, बेकरों और इत्र बनाने वालों को रखना होगा।

वह तुम्हारे खेतों, दाख की बारियों और जैतून के बागों में से सर्वोत्तम ले लेगा, और अपने सेवकों को दे देगा। वह तुम्हारे अन्न और दाखमधु का दसवाँ भाग लेकर अपने हाकिमों और सेवकों को देगा। मुझे लगभग यह सोचने पर मजबूर कर देता है कि वह भगवान के स्थान पर है।

ईश्वर ही है जो सर्वोत्तम फसल प्राप्त कराता है। उसे पहला फल मिलता है और दशमांश मिलता है। यह राजा स्वयं को उसी प्रकार स्थापित करने जा रहा है।

तेरे दास-दासियाँ, और तेरे सब से अच्छे गाय-बैल, और गदहे, वह अपने काम में ले लेगा। वह तुम्हारी भेड़-बकरियों का दसवाँ हिस्सा ले लेगा और तुम उसके दास बन जाओगे। और जब वह दिन आएगा, तब तुम अपने चुने हुए राजा से सहायता के लिये चिल्लाओगे, और यहोवा उस दिन तुम्हें उत्तर न देगा।

तो, ऐसा प्रतीत होता है कि प्रभु शमूएल से कह रहे हैं, उन्हें वह दो जो वे माँग रहे हैं। उन्हें सब राष्ट्रों के समान एक राजा दो। बस उन्हें चेतावनी दें कि वह राजा कैसा होने वाला है।

और अंत में, तुम्हें उस दिन का अफ़सोस होगा जब तुमने एक राजा की माँग की थी। और आप राहत के लिए चिल्लाने जा रहे हैं और मैं कहने जा रहा हूं, बहुत देर हो चुकी है। तुमने मेरी बात नहीं सुनी.

आपने जो मांगा वह आपको मिल गया। परन्तु लोगों ने शमूएल की बात मानने से इन्कार कर दिया। तो, सैमुअल सिर्फ उन्हें सूचित नहीं कर रहा था।

इस चेतावनी का अंतिम उद्देश्य उन्हें यहीं, अभी अपना मन बदलने के लिए प्रेरित करना है, और कहना है, नहीं, हम ऐसा नहीं चाहते हैं। और वैसे, विद्वानों ने आसपास के देशों में राजत्व का अध्ययन किया है और उन्होंने पाया है कि हां, ये राजतंत्र इसी तरह संचालित होते थे। राजाओं ने बिल्कुल वैसा ही किया जैसा सैमुअल ने यहां वर्णित किया है।

और इसलिए, लोगों को इस संस्कृति में रहते हुए यह जानना चाहिए था। और इसलिए उन्हें खुद से कहना चाहिए था, हम क्या मांग रहे हैं? नहीं, हम उस तरह के व्यक्ति के अधीन नहीं रहना चाहते। लेकिन हम यहां जो जानने जा रहे हैं वह असली कारण है कि वे एक राजा की मांग क्यों कर रहे हैं।

न्याय को लेकर चिंता सिर्फ इतनी ही नहीं है. नहीं, उन्होंने कहा, हम अपने ऊपर एक राजा चाहते हैं। और ध्यान दें कि वे आगे क्या कहते हैं।

तब हम अन्य सभी राष्ट्रों के समान होंगे जिनका एक राजा होगा जो हमारा नेतृत्व करेगा और हमारे आगे बढ़कर हमारी लड़ाई लड़ेगा। इसलिए यहां वे वास्तव में सुरक्षा, राष्ट्रीय सुरक्षा और सैन्य ताकत को लेकर चिंतित हैं। जैसे-जैसे कहानी सामने आती है, हमें पता चलता है कि इस समय ट्रांसजॉर्डन में एक विशेष ख़तरा मंडरा रहा है।

वह अम्मोनियों का राजा है। उसका नाम नहाश है, सुनने में ऐसा लगता है जैसे इसका मतलब सांप है। मुझे नहीं लगता कि उसकी मां ने उसका यह नाम रखा होगा.

यह एक नाम हो सकता है जो उसे अपने दुश्मनों से मिला हो, या यह एक समानार्थी नाम हो सकता है। किसी भी कीमत पर, वे उसके बारे में चिंतित हैं। और शाऊल वास्तव में जाने वाला है, एक बार राजा के रूप में चुने जाने के बाद, वह बाहर जाएगा और अध्याय 11 में इस आदमी से लड़ेगा।

जब हम वहां पहुंचेंगे तो इसके बारे में और अधिक जानकारी मिलेगी। लेकिन वे राष्ट्रीय सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं। तो क्या वे सचमुच भगवान पर भरोसा कर रहे हैं? मेरा मतलब है, अध्याय 7। हमने अपने पिछले पाठ में अध्याय 7 का अध्ययन किया था।

और क्या हुआ? जब इस्राएली मन फिरा रहे थे, तब पलिश्ती उन्हें धमका रहे थे, और यहोवा ने आकर शत्रु पर गरजाया। जब भगवान शत्रु के विरुद्ध स्वर्ग से गरजते हैं तो रथ, घोड़े, पैदल सेना, इनमें से कोई भी मायने नहीं रखता। प्रभु ने उनके इतिहास में बार-बार प्रदर्शित किया है, और हाल ही में भी, कि वह उन्हें जीत दिलाने में पूरी तरह सक्षम हैं।

हन्ना ने इस बारे में बात की. लेकिन नहीं, वे प्रभु में विश्वास की अपनी स्थिति से गिर गए हैं। वे भूल गये हैं कि उसने क्या किया है।

यह एक कुख्यात गिरावट है. और वे डरते हैं. और वे सोचते हैं कि एक स्थायी सेना वाला राजा होना अच्छा होगा।

हम इस नागरिक-सैनिक वाली बात से तंग आ रहे हैं, जहां हर बार कोई खतरा होता है, इज़राइल, सैमुअल सभी को लड़ने के लिए एक साथ बुलाता है। और हमें अपने कृषि उपकरण लेकर उन्हें हथियार बनाना होगा। हम बस अपना काम करने में सक्षम होना चाहते हैं।

हम ऐसा राजा चाहते हैं जिसके पास पहले से ही सेना हो। उसके पास पेशेवर सैनिक हैं, उसके पास घोड़े और रथ हैं, और वह हमारी रक्षा कर सकता है। हम अब नागरिक-सैनिक नहीं बनना चाहते।

हम सभी राष्ट्रों की तरह एक राजा चाहते हैं, जो अन्य राष्ट्रों को हराएगा, और फिर उनके बेटे-बेटियों को लेकर उन्हें अपने सैनिक बनाएगा। हम यही चाहते हैं. हम सुरक्षित महसूस करना चाहते हैं.

इसलिए, हमें इस बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। और हम उस चीज़ पर भरोसा करना चाहते हैं जिसे हम देख सकते हैं। हम दृष्टि से चलना चाहते हैं, आस्था से नहीं, अनिवार्य रूप से वे यहां यही कह रहे हैं।

और इस प्रकार, जब शमूएल ने लोगों की सारी बातें सुनीं, तो उसने यहोवा के साम्हने वही बातें दोहराईं । और यहोवा ने उत्तर दिया, उनकी सुनो और उन्हें एक राजा दो। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रभु अपने लोगों को वह सब कुछ देने के लिए तैयार हैं जो वे चाहते हैं।

और फिर सैमुअल, जिसे हमेशा एक आज्ञाकारी व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। सैमुअल, सैमुअल, मैं यहाँ हूँ। और जब यहोवा यह कहता है, तब वह ऐसा करता है।

मेरा मतलब है, यहाँ भी, कहानी के पहले, प्रभु ने कहा, उन्हें यह बताओ, और सैमुअल यह करता है। और अब यहोवा कहता है, उनकी सुनो, और उन्हें राजा दो। मैं इस बिंदु पर पढ़ने की उम्मीद

करूंगा, कि सैमुअल ने इज़राइल को एक साथ इकट्ठा किया और कुछ प्रकार की प्रक्रिया स्थापित की जिसके तहत हम एक राजा का चयन करने जा रहे थे, जो कि थोड़ी देर बाद होता है।

परन्तु शमूएल ने इस्राएल के लोगों से जो कहा वह अपेक्षित नहीं है। सब लोग अपने नगर को लौट जाओ । अब वे शायद सोच रहे होंगे, ठीक है, उसे इस प्रक्रिया को समझने के लिए थोड़ा समय चाहिए कि हम इस राजा को कैसे प्राप्त करेंगे।

मैं सोच रहा हूं कि क्या यह विरोध करने का एक तरीका है, सैमुअल की ओर से एक मूक विरोध क्योंकि वह यहां अवज्ञाकारी प्रतीत होता है। यह ऐसा है जैसे वह कहता है, सब लोग अपने-अपने कोने में, तुम लोग घर जाओ। मुझे भगवान से बात करने दो.

और हम इसे मूसा के साथ देखते हैं। हमने सुझाव दिया है कि सैमुअल एक नया मूसा है। शमूएल को यिर्मयाह में मूसा के साथ एक महान मध्यस्थ के रूप में याद किया जाता है।

और यहोवा यिर्मयाह में कहता है, यदि मूसा और शमूएल यहां होते, तो भी मैं न सुनता। तो, सैमुअल की यह प्रतिष्ठा है। इस संबंध में वह मूसा के समान है।

और शायद यह यहाँ हिमायत का एक रूप है। वह लोगों को विदा करता है। वह तुरंत बाहर जाकर राजा नहीं चुनता।

वह प्रभु को कुछ समय देना चाहता है। याद रखें जब प्रभु मूसा के पास आए, तो उन्होंने कहा, अजीब बात है, मुझे अकेला छोड़ दो। यह लगभग वैसा ही है जैसे वह उम्मीद कर रहा हो कि मूसा कुछ प्रयास करेगा।

मुझे अकेला छोड़ दो। मैं इन लोगों को नष्ट करना चाहता हूं. और मैं आपके साथ फिर से शुरुआत करने जा रहा हूं।

मैंने यह उनके साथ किया है। मैं उन्हें त्यागने के लिए तैयार हूं और मैं आपके साथ शुरुआत करूंगा। मैं तुम्हारे द्वारा इब्राहीम से किये अपने वादे पूरे कर सकता हूँ।

मूसा उसे नहीं खरीदता. और वह विरोध करता है। और वह कहता है, नहीं हे प्रभु, मिस्री क्या सोचेंगे? आप अपने लोगों का नेतृत्व नहीं करना चाहते.

और तू ने इब्राहीम से ये प्रतिज्ञाएं कीं। और वे साकार होने लगे हैं। लोग एक महान राष्ट्र बन गए हैं।

और आप हमें वह भूमि देकर इसे पूरा करने के लिए तैयार हैं जिसका वादा आपने इब्राहीम से किया था। आप दोबारा शुरुआत नहीं करना चाहते. मैं अब व्याख्या कर रहा हूँ.

लेकिन जब आप इसे निर्गमन अध्याय 32 में पढ़ते हैं, तो क्या होता है? प्रभु नरम पड़ गये। वह मूसा की बात सुनता है. कुछ लोग कहते हैं, ठीक है, वह सिर्फ यह देखने के लिए मूसा का परीक्षण कर रहा था कि क्या मूसा उसका प्रस्ताव स्वीकार करेगा।

परिच्छेद में ऐसा कुछ भी नहीं है जो ऐसा सुझाव दे। वास्तव में, उस घटना पर बाद में काव्यात्मक प्रतिबिंब, जिसे हम भजनों में देखते हैं, मूसा के अंतराल में खड़े होने के बारे में बात करता है, जो भगवान को अपने लोगों को नष्ट करने के लिए दौड़ने से रोकता है। मूसा ने मध्यस्थता की.

अब, मुझे नहीं पता कि यह सब ईश्वरीय पूर्वज्ञान और संप्रभुता और इस सब के साथ कैसे काम करता है। लेकिन मैं जो देखता हूँ वह यह है कि प्रभु अपने लोगों और अपने भविष्यवक्ता के साथ एक रिश्ते में प्रवेश करता है। और भविष्यवक्ता जो कहता है उसका ईश्वर पर प्रभाव पड़ सकता है।

लोग कभी-कभी कहते हैं कि ईश्वर अपने से बाहर किसी भी चीज़ से प्रभावित नहीं हो सकता। बाइबल संकेत करती प्रतीत होती है कि वह प्रभावित होने में सक्षम है और वह इस प्रकार के रिश्ते में रहना चुनता है। स्तोत्र, विशेष रूप से विलाप स्तोत्र, ईश्वर को प्रभावित करने का प्रयास हैं।

और इसलिए मध्यस्थता में यही शामिल है। लेकिन मैं इसे सैमुअल की ओर से एक मौन मध्यस्थता के रूप में देखता हूं। और यह दिलचस्प है, अगले अध्याय में जब प्रभु इस मुद्दे पर वापस आते हैं, तो उन्होंने एक तरह से शाऊल को राजा बनने के लिए चुना है जिसे उन्होंने मांगा था।

उन्होंने एक राजा, शाऊल, माँगा, और उन्हें शाऊल, जो माँगा गया था, मिल गया। और मुझे लगता है कि भगवान अपने मानकों के अनुसार राजा चुनते हैं। आप सोच सकते हैं, लड़के, शाऊल असफल था।

भगवान नहीं जानता था कि वह क्या कर रहा था, है ना? नहीं, वह जानता था कि वह क्या कर रहा था। उसने उन्हें एक राजा दिया, एक ऐसा लड़का जो ऊपर से अच्छा दिखता था, एक लंबा लड़का, जो अच्छा दिखता था, राजा जैसा दिखता था, लेकिन अंदर से उसके पास वास्तव में वह नहीं था जिसकी उसे ज़रूरत थी। वह उन्हें उनके सतही मानक के अनुसार एक राजा देता है जिसे वे चाहते हैं, उस प्रकार का व्यक्ति जो राष्ट्रों के बीच एक राजा होगा, उसे सबक सिखाने के लिए।

और फिर वह चुनता है, वह शाऊल को अस्वीकार करता है, और फिर वह डेविड को चुनता है क्योंकि वह डेविड के दिल को देखता है। परमेश्वर के लिए वास्तव में यही मायने रखता है। इसलिए, भगवान उन्हें सबक सिखाने की कोशिश कर रहे हैं।

वह यहां कोई गलती नहीं कर रहा है. लेकिन अध्याय 9 में, वह आता है और मूल रूप से कहता है, हम उसे एक राजा देने जा रहे हैं, लेकिन वह एक नागिद होगा। वह मेलेक , किंग नहीं, बल्कि एक अलग हिब्रू शब्द का उपयोग करता है।

वह नागिड का प्रयोग करता है। और मैं एक नागिद को एक उप-शासनकर्ता के रूप में अधिक देखता हूँ। और जब तक हम इस खंड से गुजरते हैं, प्रभु यह स्पष्ट कर देते हैं कि यह राजा अभी भी मेरे अधिकार में है।

मैं तुम्हें एक राजा दे रहा हूँ. और वह शुरू में उन्हें सभी राष्ट्रों की तरह एक राजा देने के लिए तैयार था। शमूएल ने लोगों से कहा, अपने कोने में लौट जाओ।

और फिर भगवान नरम पड़ जाते हैं और निर्णय लेते हैं, मैं अपने लोगों के साथ अपना रिश्ता बनाए रखूंगा। मैं उन्हें एक नागिद देने जा रहा हूँ. उन्हें एक राजा मिलने वाला है.

वे एक राजा चाहते हैं. मैं उन्हें एक राजा देने जा रहा हूं, लेकिन वह सभी देशों की तरह राजा नहीं बनेगा। और इसलिए यह मुद्दा सामने आता है कि राजत्व के बारे में क्या? क्या पुराने नियम के इस खंड में इसे सकारात्मक या नकारात्मक रूप से देखा गया है? और सैमुअल में भी, 1 सैमुअल 8-12 में कुछ विद्वान विभिन्न स्रोतों को देखते हैं जिन्हें एक साथ मिला दिया गया है।

एक पक्ष राज-समर्थक स्रोत है, और दूसरा पक्ष राज-विरोधी है। और इसलिए यहां उनके विचार एक तरह के प्रतिस्पर्धी हैं। दोनों विचारों को एक कहानी में एक साथ लाया गया है, लेकिन कुछ सामग्री राज-समर्थक है, और कुछ राज-विरोधी है।

मुझे नहीं लगता कि यहां ऐसा कुछ हो रहा है। लेकिन इससे यह सवाल उठता है कि हम राजत्व को कैसे देखते हैं? यदि हम व्यवस्थाविवरण अध्याय 17 पर वापस जाएँ, तो हम देखते हैं कि प्रभु ने इस विशेष दिन की भविष्यवाणी की थी। और यह व्यवस्थाविवरण अध्याय 17, श्लोक 14 है, जहां से हम शुरू करेंगे।

जब तुम उस देश में प्रवेश करो जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें देता है, और तुम उसे अपने अधिकार में करके उस में बस जाओ, और तुम कहते हो, हम चारों ओर की सब जातियों के समान अपने ऊपर एक राजा नियुक्त करें। यह ऐसा है मानो प्रभु स्वाभाविक रूप से अनुमान लगा रहे हों कि वे अपने आस-पास के राष्ट्रों की तरह ही एक राजा चाहेंगे। अपने ऊपर वही राजा नियुक्त करना जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर चुने।

इसलिए, जब वह दिन आता है और आप सभी राष्ट्रों की तरह एक राजा चाहते हैं, तो आपको किसी ऐसे व्यक्ति को चुनना होगा जिसे प्रभु चुनते हैं। वह अवश्य ही तुम्हारे ही भाइयों में से होगा। किसी परदेशी को, अर्थात इस्राएली भाई न हो, अपने ऊपर अधिकार न करना।

इसलिए, राजा को, सबसे पहले, वाचा समुदाय का हिस्सा बनना होगा। विदेशी नहीं हो सकता, इसका इज़रायली होना ज़रूरी है। इसके अलावा, राजा को अपने लिए बड़ी संख्या में घोड़े नहीं खरीदने चाहिए, या लोगों को उनमें से अधिक प्राप्त करने के लिए मिस्र लौटने के लिए बाध्य नहीं करना चाहिए।

क्योंकि यहोवा ने तुम से कहा है, कि तुम उस मार्ग से फिर न लौटना। वे मिस्र जाकर घोड़े क्यों हासिल करना चाहेंगे? खैर, घोड़े रथ खींचते हैं। वे सभी राष्ट्रों की तरह एक राजा चाहेंगे, एक रथ सेना चाहेंगे।

भगवान कहते हैं, नहीं, तुम्हें इस तरह से घोड़े जमा नहीं करने चाहिए। वैसे, सुलैमान ने इसे तोड़ दिया। वह इस नीति को तोड़ता है।

डेविड ने नहीं किया. डेविड इसके प्रति वफादार था. सुलैमान ने इसे तोड़ दिया।

और इसलिए हम पहले से ही देख रहे हैं, जैसे-जैसे यह सामने आना शुरू होता है, यह सभी राष्ट्रों की तरह एक राजा की तरह नहीं लगता है। उन्होंने एक माँगा, और प्रभु ने कहा, जिसे मैं चुनूँ उसे अपने ऊपर नियुक्त करो। लेकिन वैसे, राजा के पास रथ बल नहीं होना चाहिए।

उसके पास बहुत सारे घोड़े नहीं होने चाहिए। इसलिए वह राष्ट्र की तरह एक राजा की तरह नहीं बनने वाला है। मैं तुम्हें एक राजा देने जा रहा हूं, लेकिन उस तरह नहीं।

अगला, श्लोक 17 में, उसे कई पत्नियाँ नहीं रखनी चाहिए। ओह, राजा सभी राष्ट्रों की तरह है। मेरा मतलब है, कितने अनेक हैं? मेरा मतलब है, आप डेविड के साथ इसमें शामिल हों।

बाद में, जब डेविड ने पत्नियाँ जमा करना शुरू किया, तो कुछ लोग कहेंगे, ठीक है, उसने कानून का उल्लंघन नहीं किया क्योंकि यह कई पत्नियाँ कहता है। अच्छा, कितने अनेक हैं? हम डेविड के साथ जो देखते हैं वह एक बढ़ता हुआ पैटर्न है। वह उन्हें जमा कर रहा है.

और मुझे लगता है, भले ही वे स्थानीय लड़कियाँ थीं और उन्होंने उसके दिल को ईश्वर से दूर नहीं किया था, वह राष्ट्रों की मिसाल की तरह एक राजा की स्थापना कर रहा था जिसे उसके बेटे सुलैमान ने तब चरम सीमा पर पहुँचाया था। और सुलैमान ने निश्चित रूप से इसका उल्लंघन किया। उसे बहुत सी पत्नियाँ नहीं रखनी चाहिए अन्यथा उसका हृदय भटक जाएगा।

और जिस तरह से यह होता है कि हम गठबंधन बनाना चाहते हैं।' और इसलिए, राजा दूसरे राजा की बेटी को ले जाएगा जिसके साथ वह गठबंधन बना रहा है और उससे शादी करेगा क्योंकि अपने बहनोई के खिलाफ लड़ना कठिन है। देखिये, यह संधि की स्थिति को सुगम बनाता है।

लेकिन ये महिलाएं अपनी धार्मिक व्यवस्था के साथ आती हैं। उनके अपने-अपने देवता हैं। आप इसे बाद में अहाब और इज़ेबेल के साथ देखेंगे।

वह अपने सभी बाल नबियों को अपने साथ लाती है। बाद में सुलैमान का हृदय उसकी विदेशी पत्नियों द्वारा भटका दिया गया। और उसे बड़ी मात्रा में चाँदी और सोना जमा नहीं करना चाहिए।

अन्यजातियों के समान राजा भी यही करेंगे। कई कारणों से आसपास चांदी और सोना रखना अच्छा है। यह आपको अमीर, शक्तिशाली और प्रमुख दिखाता है।

और आप उस चाँदी और सोने का उपयोग संधियाँ और गठबंधन बनाने और इस तरह की चीज़ों में कर सकते हैं। यदि आपके पास कुछ चांदी और सोना है जिसे आप श्रद्धांजलि के रूप में दे सकते हैं तो आप अधिक शक्तिशाली राजाओं को खरीद सकते हैं। अगर बात उस पर आती है.

तो, ऐसा प्रतीत होता है कि प्रभु व्यवस्थाविवरण में कह रहे हैं, जब वह दिन आएगा कि तुम्हें राष्ट्रों जैसा राजा चाहिए, तो यह ठीक है। जब तक तुम्हारा राजा मेरे द्वारा चुना गया है और वह इस्राएली है, तब तक तुम एक राजा रख सकते हो। लेकिन मैं उसे सभी राष्ट्रों की तरह राजा नहीं बनने दूंगा।

अब प्रथम सैमुअल 8 में, सैमुअल कहता है कि यही होने वाला है। मुझे लगता है कि भगवान को एहसास है कि यह उसी में विकसित होगा क्योंकि राजा राजा होने के नाते इसे उस दिशा में ले जा रहे हैं। लेकिन शुरुआत में, प्रभु कह रहे हैं कि मैं वास्तव में तुम्हें सभी राष्ट्रों की तरह एक राजा नहीं दे रहा हूँ।

और ये दिलचस्प है. पद 18, जब वह अपने राज्य का सिंहासन ग्रहण करता है, तो उसे लेवीय याजकों से ली गई इस व्यवस्था की एक प्रति अपने लिए एक पुस्तक पर लिखनी है। यह उसके पास रहे और वह इसे जीवन भर पढ़े, ताकि वह यहोवा अपने परमेश्वर का आदर करना सीखे, और इस व्यवस्था और इन विधियों के सब वचनों का ध्यानपूर्वक पालन करे, और अपने आप को अपने भाइयों से अच्छा न समझे। क़ानून से दाएँ या बाएँ मुड़ें।

वह एक लंबा वाक्य था. लेकिन मूल रूप से, वह कह रहा है कि उसे टोरा का छात्र होने की आवश्यकता है। उसे परमेश्वर के कानून का अध्ययन करने की आवश्यकता है ताकि वह परमेश्वर के लोगों का उचित तरीके से नेतृत्व कर सके।

और वह नम्र हो और उन पर प्रभुता न करे। आमतौर पर राजा इस तरह से काम नहीं करते। तब वह और उसके वंशज इस्राएल में उसके राज्य पर बहुत समय तक राज्य करेंगे।

अत: प्रभु ने इस्राएल में इसी प्रकार के राजा की आशा की थी। 1 शमूएल 8 में, वह परेशान हो जाता है जब वे सभी राष्ट्रों की तरह एक राजा की मांग करते हैं और वह हल्के ढंग से नहीं कहता है, याद रखें कि मैंने व्यवस्थाविवरण में क्या कहा था, यहां बताया गया है कि यह कैसे काम करेगा। नहीं, वह उनके रवैये के कारण, उस संदर्भ के कारण तैयार है जिसमें यह होता है।

वे एक विदेशी राजा से डरते हैं और वे एक स्थायी सेना चाहते हैं और वे राष्ट्रीय सुरक्षा चाहते हैं और वे भगवान पर भरोसा नहीं कर रहे हैं जो उनके दुश्मनों के खिलाफ स्वर्ग से गरजता है। वे भरोसा नहीं कर रहे हैं. मुझे लगता है कि इसीलिए वह परेशान है और वह कहता है, ठीक है, उन्होंने मुझे अस्वीकार कर दिया है ताकि वे उस राजा को पा सकें।

इसे उसे दे दो, सैमुअल। सैमुअल ने फैसला नहीं किया। मुझे लगता है कि उसने अभी निर्णय लिया है कि हम उस पर देरी करेंगे।

और जब अध्याय 9 में प्रभु वापस आते हैं, तो उन्होंने व्यवस्थाविवरण के अनुसार कार्य करने का निर्णय लिया है। मैं उन्हें एक राजा देने जा रहा हूँ। वे उसे राजा कहेंगे, लेकिन मेरे लिए वह एक नागिन है।

वह मेरे अधिकार में है और वह उस तरह नहीं जाने वाला जिस तरह ये राजा जाते हैं। अब अंततः, राजाओं की प्रकृति और मेरे लोगों की प्रकृति को देखते हुए, संभवतः ऐसा ही होगा, लेकिन यह वह नहीं है जिसे हम सीधे तौर पर अधिकृत करने जा रहे हैं। तो, आइए यह सब ध्यान में रखें और फिर न्यायाधीशों की पुस्तक पर वापस जाएँ जहाँ शमूएल तक पहुँचने से पहले राजसत्ता का यह मुद्दा सामने आता है।

मेरा मतलब है, यह पहली बार नहीं था कि राजत्व का उल्लेख किया गया है। याद रखें, गिदोन की जीत के बाद लोग उसके पास आते थे और कहते थे, हम चाहते हैं कि आप हमारे राजा बनें। और गिदोन कहता है, तुम्हारे पास पहले से ही एक राजा है।

यहोवा तुम्हारा राजा है। मैं आपके राजा के रूप में सेवा नहीं करने जा रहा हूँ। अब हम पहले ही कह चुके हैं कि गिदोन, अच्छा लग रहा था, लेकिन गिदोन ने थोड़ा समझौता किया।

लेकिन मैं तुमसे कहता हूं, वह कहता है, मैं तुम्हारा कुछ सोना और चांदी ले लूंगा जो तुम्हारे पास है। और उसने पत्रियाँ जमा कर लीं। उसने अपने एक बेटे का नाम रखैल रखा।

मेरे पिता राजा हैं. इसलिए, मुझे लगता है कि गिदोन राजत्व के लाभ चाहता था। वह चाहते थे कि जब लोग उनके बारे में उस नजरिए से सोच रहे हैं तो वे सुविधाएं क्यों न लें? लेकिन वह पूरी ज़िम्मेदारी नहीं चाहते थे.

उसे एहसास हुआ कि यह गलत होगा. और इसलिए मुझे लगता है कि हम वहां जो देख रहे हैं, गिदोन ने वास्तव में यह कहकर उचित निर्णय क्यों लिया, नहीं, मैं आपका राजा नहीं बनने जा रहा हूं, क्योंकि लोगों का रवैया 1 शमूएल 8 जैसा था। वास्तव में ईश्वर की अस्वीकृति। और मुझे लगता है कि गिदोन ने वह देखा।

और इसलिए उन्होंने कहा नहीं. लेकिन फिर बाद में न्यायाधीशों में, उपसंहार में, उपसंहार इस कथन के साथ शुरू और समाप्त होता है, कि हर कोई वही कर रहा था जो उसकी अपनी नज़र में सही था क्योंकि इज़राइल में कोई राजा नहीं था। अच्छा, यह कौन सा तरीका है? गिदोन की कहानी से आपको यह आभास होता है कि राजा की मांग करना ईश्वर को अस्वीकार करना है।

तो अब हम सकारात्मक दृष्टि से राजत्व के बारे में बात कर रहे हैं। यदि उनका कोई राजा होता तो वे वही करते जो उचित था। ठीक है, मुझे लगता है कि न्यायाधीशों के उपसंहार में, गिदोन का सामना करते समय लोगों के मन में जो था या 1 शमूएल 8 में उनके मन में जो था, उसके मुकाबले हमारे पास एक अलग प्रकार का राजा है। इसमें कोई विरोधाभास नहीं है।

ऐसा लग सकता है. मुझे लगता है कि न्यायाधीशों के लेखक जो कह रहे हैं, आप जानते हैं, इस समय इसराइल को वास्तव में जरूरत थी, ये न्यायाधीश आध्यात्मिक रूप से कमजोर और

कमजोर और कमजोर होते गए। शिमशोन शारीरिक रूप से कमज़ोर नहीं था, परन्तु वह आध्यात्मिक रूप से कमज़ोर था।

और इसलिए, उन्हें वास्तव में एक राजा की ज़रूरत थी, लेकिन किसी राजा की नहीं, जिस तरह के राजा का वर्णन व्यवस्थाविवरण अध्याय 17 में किया गया है। उन्हें उसी तरह के राजा की ज़रूरत थी। सभी राष्ट्रों के समान राजा नहीं, बल्कि कानून लिखने वाला राजा।

और आप जानते हैं, जब आप चीजें लिखते हैं, तो वह दिमाग में बैठ जाती है। जब मैं स्कूल में था, हम नोट्स लेते थे। और जब प्रोफेसर व्याख्यान दे रहे थे तो नोट्स लेने के बारे में कुछ ऐसा था जिसने वास्तव में सामग्री को आपके दिमाग में बिठाने में मदद की।

और फिर आप वापस जाकर इसे पढ़ सकते हैं। परन्तु उन्हें उस प्रकार के राजा की आवश्यकता है जो जीवन भर कानून पढ़ता रहे ताकि वह भगवान के रूप में भगवान का सम्मान करना सीख सके और कानून के सभी शब्दों और इन नियमों का ध्यानपूर्वक पालन कर सके। वह इसे जीकर रहेगा।

वह खुद को किसी और से बेहतर नहीं मानने वाला है। वह उस कानून से पीछे हटने वाले नहीं हैं. वह मूलतः आज्ञाकारिता का आदर्श बनने जा रहा है और लोग उसके उदाहरण का अनुसरण करेंगे।

और इसलिए, जब न्यायाधीश कहते हैं कि उन्हें एक राजा की आवश्यकता है, तो न्यायाधीशों के मन में यही बात होती है। और मुझे लगता है कि जैसे ही यह कहानी 1 सैमुअल में सामने आएगी, हम वही चीज़ देखेंगे। प्रजा सभी राष्ट्रों की तरह एक राजा चाहती है।

प्रभु नाराज़ हैं क्योंकि उन्हें एहसास हुआ कि वे मुझ पर भरोसा नहीं कर रहे हैं। वे किसी ऐसे राजा को चाहते हैं जिसे वे देख सकें। वह उन्हें वह देने के लिए तैयार है।

वहां थोड़ा विलंब हुआ है, जिसका संचालन सैमुअल ने किया है। और प्रभु वापस आते हैं और कहते हैं, ठीक है, मैं उन्हें एक नेता दूंगा। और वह हमारे पास मौजूद इन न्यायाधीशों से भिन्न होंगे।

और वे उसे मेलेक कहेंगे। मैं उसे नागिड कहने जा रहा हूं। और वह मेरे अधीन वाइस-रीजेंट बनने जा रहा है।

और जैसा कि हम इसे पढ़ते हैं, हम समझते हैं कि प्रभु उन्हें जो राजा देने जा रहे हैं वह व्यवस्थाविवरण के नियमों और विनियमों के अधीन होगा। और वास्तव में, जब हम 1 शमूएल 10 में पहुँचते हैं, तो हम इसे देखेंगे जैसे शमूएल उनसे राजत्व के बारे में बात कर रहा है। वह अध्याय 10 के श्लोक 25 में लोगों को राजत्व के नियम समझाने जा रहा है।

कुछ लोग इसे सैमुएल ने अध्याय आठ में जो वर्णन किया था उसके संदर्भ के रूप में देखते हैं। मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे लगता है कि यह व्यवस्थाविवरण 17 का संदर्भ है।

वह लोगों को समझा रहे हैं कि राजशाही कैसे चलेगी। और फिर अध्याय 12 में, प्रभु मूल रूप से कहने जा रहे हैं, जब तक आपका राजा और आप मेरी बात मानते हैं, तब तक आपका राजा अच्छा करेगा और आप भी अच्छा करेंगे। इसलिए, इस खंड के अंत तक यह बिल्कुल स्पष्ट है कि भगवान ने अपनी प्रारंभिक प्रतिक्रिया का समर्थन किया है।

और आप सोच सकते हैं, क्या ईश्वर ऐसा करेगा? हाँ। उसने इसे निर्गमन 32 में मूसा के साथ किया था और वह इसे यहाँ भी करता है। इस छोटे से खंड के अंत तक, वह उन्हें अपने अधिकार के तहत एक राजा देने जा रहा है जो व्यवस्थाविवरण 17 में सिद्धांतों का पालन करने और लोगों को भगवान की आज्ञाकारिता में नेतृत्व करने के लिए जिम्मेदार है।

दुर्भाग्य से, शाऊल उस संबंध में असफल होने जा रहा है। तो इस तरह मैं उस स्पष्ट विरोधाभास को हल करता हूं जो हम अनुच्छेदों के बीच देखते हैं। कुछ अंश राजा-समर्थक प्रतीत होते हैं, और कुछ अन्य राजा-विरोधी प्रतीत होते हैं।

लेकिन मुझे लगता है कि हम इसे इस तरह से हल कर सकते हैं। न्यायाधीशों का कहना है कि प्रभु के अधिकार के अधीन राजत्व का एक आदर्श है जिसकी इज़राइल को आवश्यकता है। और प्रभु निर्णय लेते हैं कि हम उन्हें इसी प्रकार का राजा देंगे।

लेकिन दुर्भाग्य से, लोग राजा को अलग तरह से देखते हैं। इसलिए, अध्याय 9 में, हमारे अगले पाठ में, हम शाऊल नामक राजा के लिए परमेश्वर की पसंद को देखेंगे। लोगों ने एक राजा के लिए प्रार्थना की, और हिब्रू में, शाल पूछे जाने वाला शब्द है, और उन्हें शाऊल मिला , जो हिब्रू में उसका नाम है।

वह एक के लिए पूछा गया है. वह उन्हें वही देता है जो वे माँगते हैं। हाँ, राजा उसके अधिकार में रहेगा, परन्तु वह हृदय को देखकर शाऊल को नहीं चुनेगा।

वह बस बाहरी दिखावे को देखने जा रहा है, और वह उन्हें दिखाने जा रहा है कि कैसे बाहरी दिखावा, दृष्टि से चलना, भ्रामक हो सकता है। और फिर जब शाऊल विफल हो जाता है, तो वह दाऊद की ओर मुड़ जाएगा, और दाऊद को परमेश्वर के लिए उसके हृदय के अंदर क्या है, उसके आधार पर चुना जाएगा। लेकिन फिर भी, डेविड कई बार असफल रहे।

लेकिन हम भविष्य के पाठों में उस सब पर चर्चा करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म 1 और 2 सैमुअल पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 6, 1 शमूएल 8 है, इज़राइल एक राजा की मांग करता है।